बिल्ली के रोमांचक कारनामे

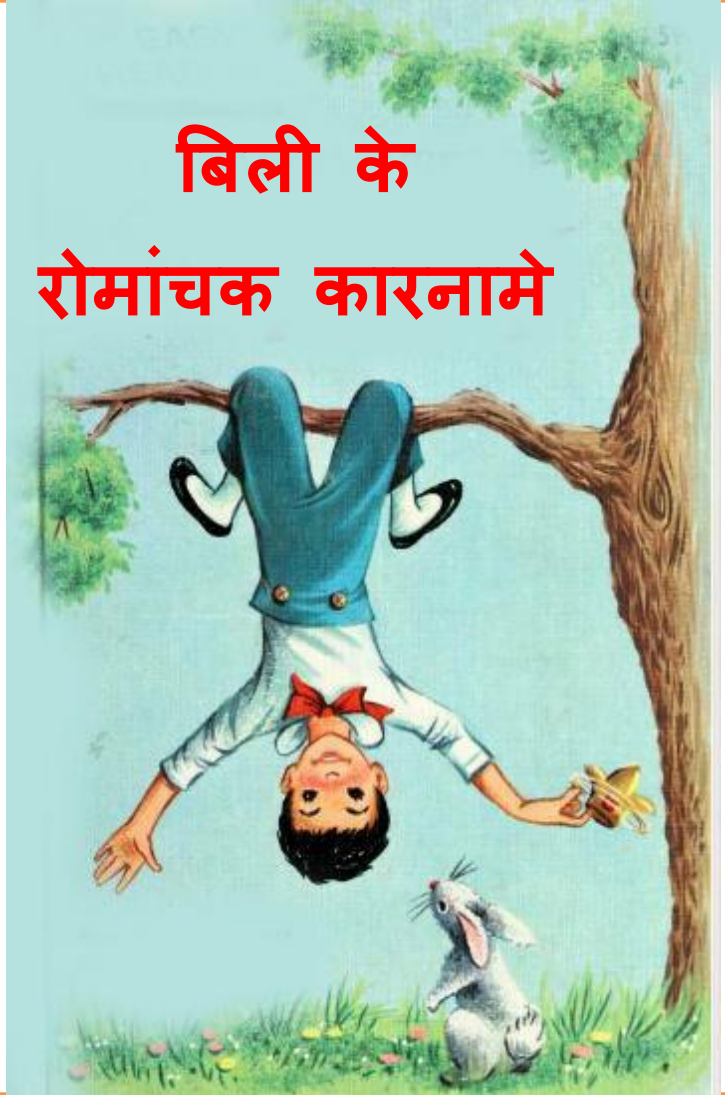

बिली के
रोमांचक कारनामे

बहुत पुरानी बात है.
किसी दूर देश में एक लड़का रहता था.
नई-नई चीज़ें बनाने के बारे में वो हर समय सोचता था.
उनमें से कई चीज़ें काफी मूर्खतापूर्ण होती थीं.

उस लड़के का नाम था बिली.
उसकी माँ उसे सिली-बिली
यानि मूर्ख-बिली बुलाती थीं.
पिता भी उसे सिली-बिली बुलाते थे.
और सिली-बिली करता क्या था?
एक दिन पिता ने उसे
पॉपकॉर्न का एक पैकेट दिया.
क्या बिली ने पॉपकॉर्न खाया?
तुम्हें क्या लगता है?
बिल्कुल नहीं!

फिर बिली ने बहुत सोचा.
“मैं उन्हें दिखाऊँगा कि मैं मूर्ख नहीं हूँ.”
फिर उसने पॉपकॉर्न लिए
और उन्हें मिट्टी में बीजों जैसे बो दिया.

बिली की माँ ने पूछा,
“तुम इन पोप्कोर्न्स को ज़मीन में क्यों
बो रहे हो, बिली?”
बिली ने कहा, “मैं पोप्कोर्न्स बो रहा हूँ.
मैं रोज़ाना उन्हें पानी से सीचूंगा.
फिर पॉपकॉर्न की नई फसल आएगी.
फिर मेरे पास बोरे भर-भर कर पॉपकॉर्न होंगे.”

“तुम बेवकूफ ही रहोगे, सिली-बिली,”
माँ ने कहा.
“तुम वाकई में मूर्ख हो!”

पिताजी ने कहा,
“बिली मुझे लगता है कि तुम हमेशा इसी तरह की बेवकूफी की बातें करोगे.”

एक दिन बिली ने
उस बारे में बहुत सोचा.
“मैं उन्हें दिखाऊँगा कि मैं मूर्ख नहीं हूँ.”
फिर बिली घर के पिछवाड़े में गया.
उसके हाथ में एक बर्तन था
जिसमें उबलता हुआ पानी था!
उसने दो लाल मुर्गियों को बुलाया.
उसने उन मुर्गियों को उबलता हुआ
गर्म पानी पिलाने की कोशिश की.

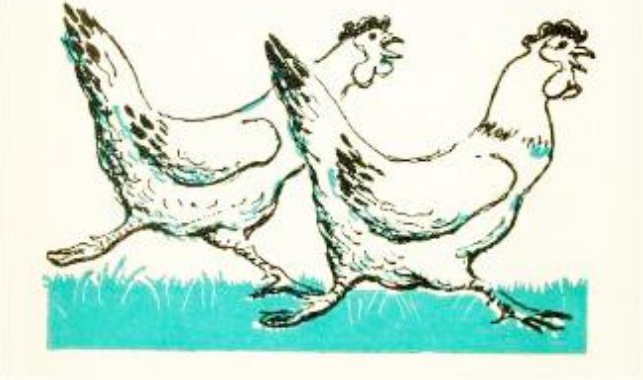

बिली की माँ ने कहा,
"तुम मुर्गियों को उबलता गर्म पानी
क्यों पिलाना चाहते हो?"
"मैं मुर्गियों को उबलता गर्म पानी इसलिए
पिलाना चाहता हूँ जिससे वे साधारण अंडो
की बजाए उबले हुए अंडे दें."
"सिली-बिली तुम वाकई
में एकदम मूर्ख हो!"

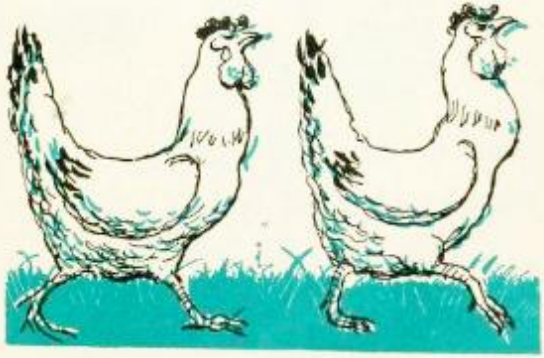

पिताजी ने कहा,
“बिली मुझे लगता है कि तुम हमेशा इसी तरह बेवकूफी की बातें करोगे.”

एक दिन बिली ने कहा,
“मैं उन्हें दिखाऊँगा
कि मैं मूर्ख नहीं हूँ.
मैं कोई ऐसा आदमी खोजूंगा जो
मुझसे भी ज्यादा बेवकूफ हो.”

फिर बिली घर से बाहर निकला
और आगे-आगे चला.

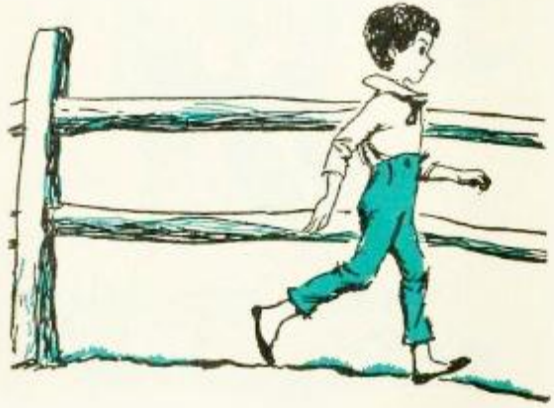

वो एक नदी के किनारे पहुंचा.
वहां उसे एक आदमी दिखा.

“आप यहाँ क्या कर रहे हैं?” बिली ने पूछा.
उस आदमी ने कहा, “मैं नदी से पानी निकालने
की कोशिश कर रहा हूँ.”
“पर आपका बर्तन तो छेदों से भरा है,” बिली ने कहा.
“बिल्कुल ठीक,” उस आदमी ने कहा.
“हाँ, चलनी से पानी निकलना वाकई
में बहुत कठिन काम है.”

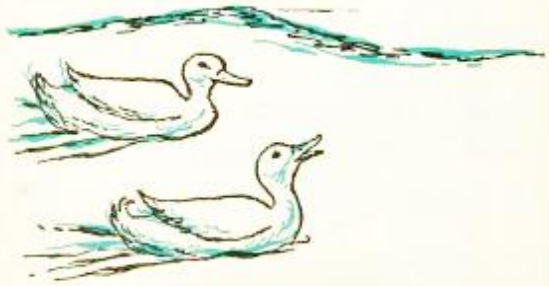

"क्या मैं आपकी कुछ मदद करूं," बिली ने कहा.
बिली ने कुछ घास के तिनके
और गीली मिटटी से बर्तन के छेदों को बंद किया.
"अब आप," बिली ने कहा, "बर्तन से आसानी से
पानी निकाल पाएंगे."

“तुम्हारा बहुत-बहुत शुक्रिया!” उस आदमी ने कहा. “तुम बहुत समझदार हो, और सारी ज़िन्दगी समझदार रहोगे.”

फिर उस आदमी ने बिली को सोने की एक घड़ी दी.

फिर बिली आगे चला.
वो आगे चलता ही गया.

आगे जाकर उसे कुछ लोग मिले.
वे बहुत दुखी लग रहे थे.
“आप लोग इतने दुखी क्यों हैं?” बिली ने पूछा.
“क्या मैं आपकी कुछ मदद कर सकता हूँ?”

“हम में से एक आदमी खो गया है,”
उनमें से एक ने कहा.
बिली ने पूछा, “क्या आपने अच्छी
तरह से गिनती की?”
“हाँ, हमने बहुत संभालकर गिना,”
उस आदमी ने कहा.
“हमने कुल मिलकर नौ लोग गिने.
पर आज सुबह हम दस थे.
हम में से एक आदमी खो गया है.”
बिली ने कहा,
“ज़रा मुझे दिखाओ कि तुमने कैसे गिना.”
“फिर उस आदमी ने गिनना शुरू किया.
“एक, दो, तीन .....”
उसने नौ लोग गिने.
पर वो खुद को गिनना भूल गया.

“अरे!” बिली ने उस आदमी से कहा.
“तुम खुद को गिनना भूल गए!”
फिर बिली ने उन लोगों से कहा.
“देखो मैं तुम्हारे उस खोए हुए साथी
को ढूंढ सकता हूँ.
उसके बदले में तुम मुझे क्या दोगे?
“हमारे पास जितने भी पैसे हैं
वे हम तुम्हें दे देंगे,” उन आदमियों ने कहा.
फिर बिली ने कहा, “ठीक है!
अब मुझे गिनने दो.”
फिर उसने पहले आदमी को गिना.
उसने उसे एक थपकी मारी.
फिर उसने अगले आदमी को गिना.
उसने उसे दो थपकी दीं!
फिर उसने अगला आदमी गिना – तीन थपकी!

फिर बिली ने बाकी को गिना –
चार थपकी! पांच थपकी! छह थपकी!

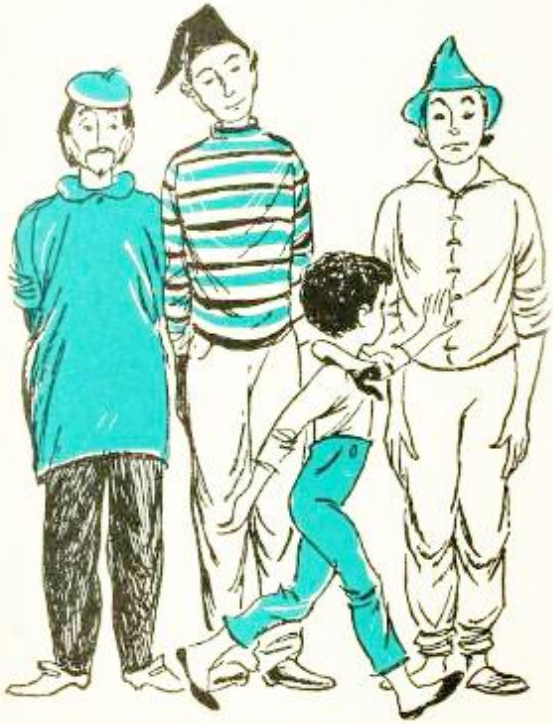

सात थपकी! आठ थपकी!
नौ थपकी!

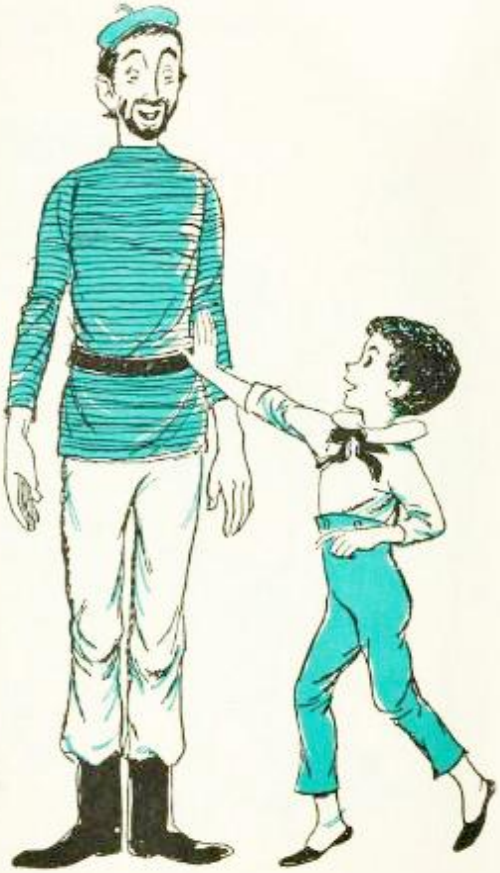

वे आदमी अपने खोए साथी को
मिलकर बेहद खुश हुए.
“गनीमत है, कि कोई खोया नहीं!”

फिर उस लोगों ने बिली से कहा,
“तुम बेहद समझदार हो.
और तुम सारी जिंदगी
समझदारी के काम करोगे.”
फिर उनके पास जितने भी पैसे थे
वे उन्होंने बिली को दे दिए.

फिर बिली आगे चला.
अंत में वो एक शहर में पहुंचा.

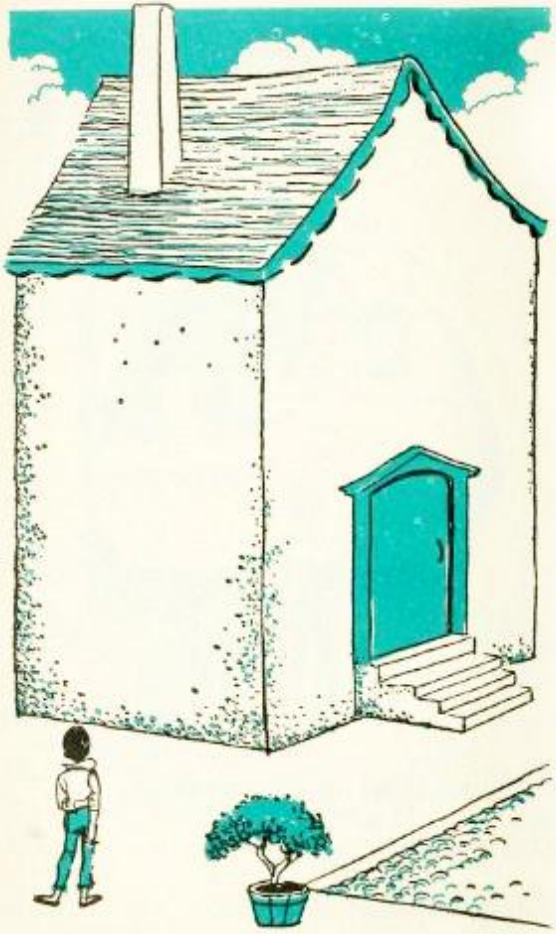

वहां उसे एक घर दिखाई दिया.
“यह बड़ा अजीब घर है!” बिली ने कहा.
“इस घर में एक भी खिड़की नहीं है!”
तभी उस घर में से एक आदमी
दौड़ा हुआ बाहर निकला.
उसके हाथ में एक बर्तन था.

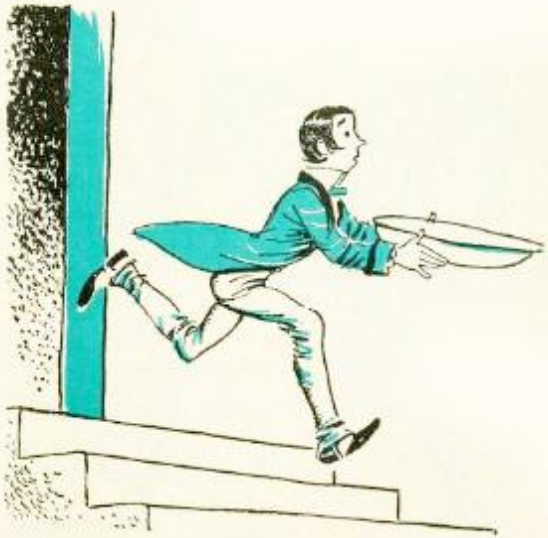

फिर उस घर में से और लोग
बाहर निकलकर भागे.
सभी के हाथ में एक-एक बर्तन था.

फिर वे आदमी दुबारा घर में घुसे.
वे लोग लगातार घर के अन्दर-बाहर
आ-जा रहे थे.

“उनके बर्तन तो खाली हैं,” बिली ने कहा.
“वे बर्तन लेकर बार-बार क्यों बाहर आ रहे हैं?”
उनमें से एक आदमी रुका और उसने कहा.
“वैसे यह घर बहुत अच्छा है, पर उसमें अन्दर बस
अँधेरा-ही-अँधेरा है.
हम लोग बर्तन भर-भर कर अन्दर सूरज की रोशनी
लेकर जा रहे हैं, फिर भी अन्दर गहरा अँधेरा है.
अन्दर हमें कुछ भी दिखाई नहीं देता है.”
“सभी आदमियों से कहो कि वे घर
के अन्दर-बाहर दौड़ना बंद करें,” बिली ने कहा.
“फिर मैं उनकी कुछ मदद करने की कोशिश करूंगा.”

फिर बिली ने उन लोगों से कहा,
“तुम लोगों ने एक अच्छा घर बनाया.
पर तुमने घर में एक चीज़ नहीं बनाई.
तुमने अपने घर में कोई खिड़की नहीं बनाई.”
उसके बाद उन लोगों ने अपने घर में
खिड़कियाँ बनाईं.
फिर घर के अन्दर का अँधेरा ख़त्म हुआ
और अन्दर उजाला हुआ.
उम्नका घर सूरज की रोशनी से भर गया.

“वाह!” उन लोगों ने कहा.
उन्होंने बिली से कहा,
“तुम बेहद समझदार हो.
और तुम सारी जिंदगी
समझदारी के काम करोगे.”
उन लोगों ने बिली से कहा,
“कृपा करके तुम हमारे राजा बन जाओ.”
उन्होंने बिली को सोने का बना
एक मुकुट भी दिया.
“मैं आपका राजा नहीं बनना चाहता हूँ,”
बिली ने कहा.
“पर मैं आपका मुकुट लेकर अब घर जाऊँगा.
वहां मैं अपने माता-पिता को यह मुकुट दिखाऊँगा.”

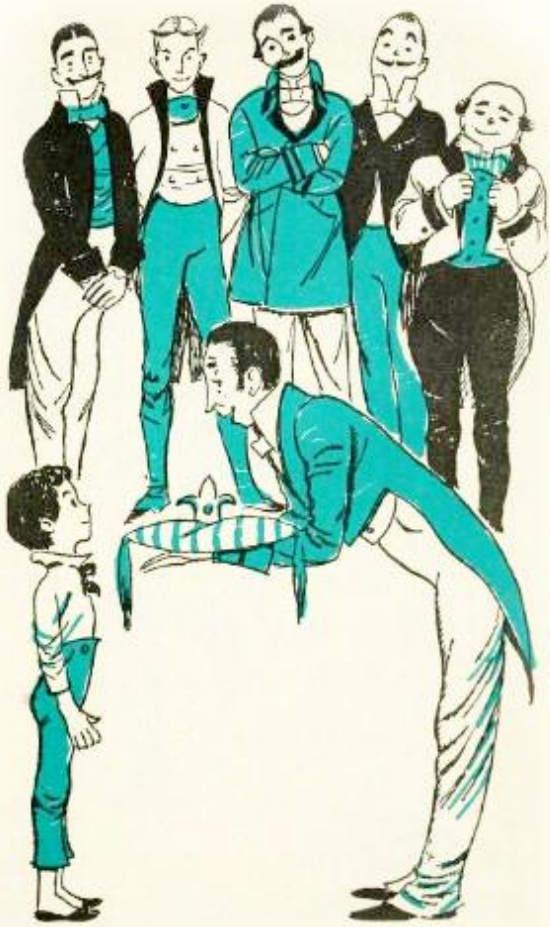

फिर बिली घर गया.

उसके माता-पिता ने सोने का बना मुकुट देखा.
उन्होंने पूछा,
“बिली, सिली-बिली, यह बताओ कि तुम्हें
यह सोने का मुकुट कहाँ से मिला?”

तब बिली ने उन्हें पूरी कहानी सुनाई.

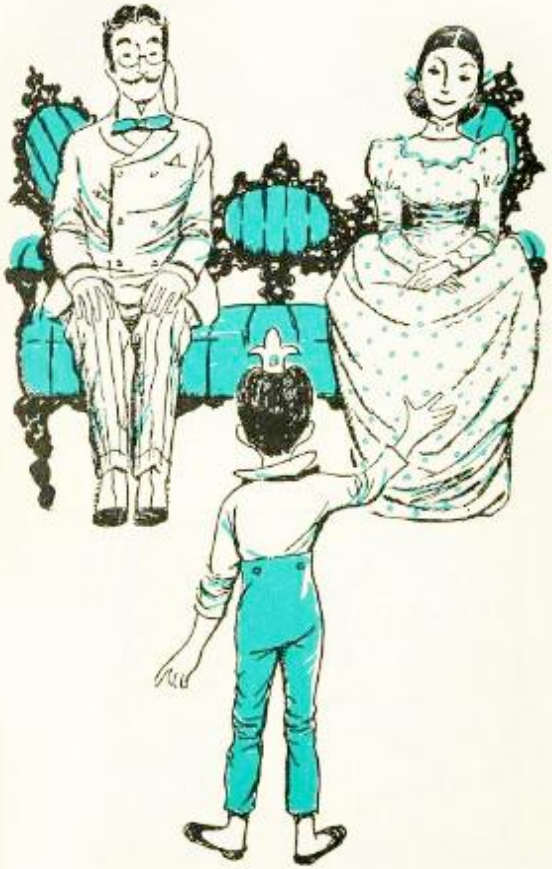

उसके बाद उसने अपने पिताजी को सोने की बनी घड़ी दी.

उसने अपनी माँ को सारे पैसे दिए.

पर बिली ने सोने का मुकुट अपने ही पास रखा. वो उसे हमेशा पहनता था.

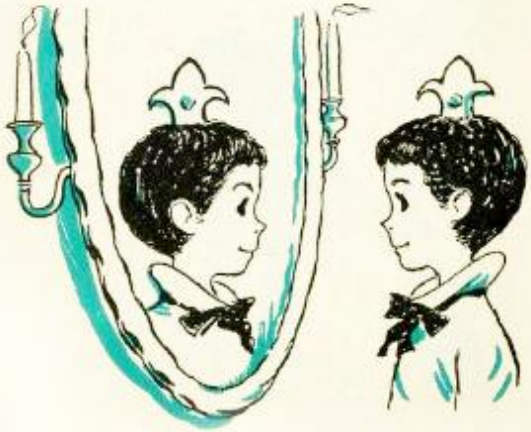

पेड़ों से झूलते समय भी वो उसे पहनता था.

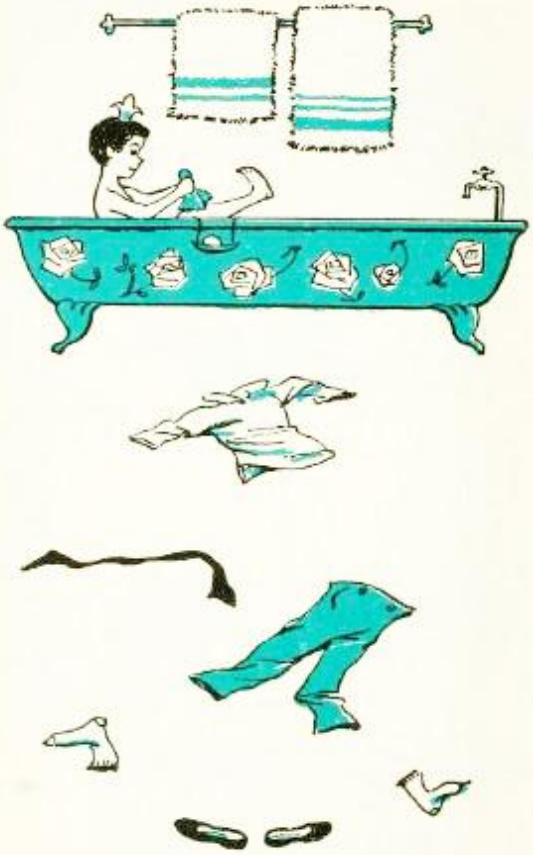

वो नहाते समय भी मुकुट को पहनता था.

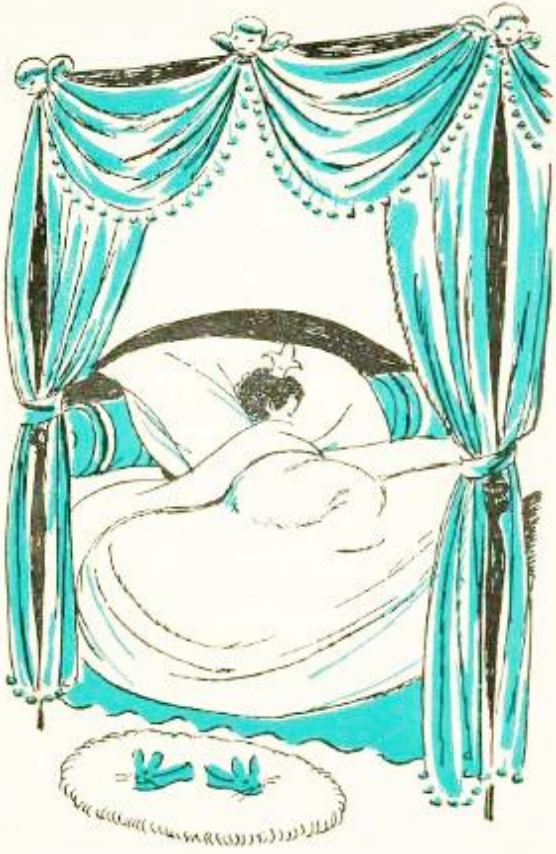

... और सोते समय भी!

फिर बिली ने अपने माता-पिता से कहा,
“कृपा कर आप अब मुझे सिली-बिली के
नाम से बुलाना बंद करें.”
“पर वही तो तुम्हारा नाम है,” माँ ने कहा.
“सिली-बिली, तो तुम्हारा नाम है.”
“नहीं! मेरा नाम विलियम है,” बिली ने कहा.

उसके बाद समझदार विलियम सोचने लगा.
“शायद,” उसने कहा,
“मैं कोई तरकीब निकाल सकता हूँ
जिससे गायें चाकलेट-दूध दे सकें!”